30

क्रूस की बड़ी बातें, 3

1 यूहन्ना 2:1, 2

''और वही हमारे पापों के प्रायश्चित है ... '' (1 यूहन्ना 2:2)।

''प्रायश्चित''

''प्रायश्चित'' के लिए अंग्रेज़ी का बड़ा शब्द ''propitiation'' कई बार जोड़ करना कठिन लगता है और कई बार तो इसका उच्चारण भी गलत होता है। इस शब्द से एक धारणा का पता चलता है क्योंकि मूर्तिपूजक परम्पराओं ने इसे धुंधला कर दिया है। मूर्तियों को बचकाना सनक के रूप में देखा जाता था, जिसे प्रसन्न करना आवश्यक होता था। यीशु के समय में ''प्रायश्चित'' का अर्थ लहू का बलिदान देकर मूर्ति के क्रोध को शान्त करना था।

परमेश्वर मनमौजी नहीं है यानी वह इससे कहीं ऊपर है कि उसकी भावनाओं को आहत किया जा सके। उसने उद्धार तैयार किया, जिसके द्वारा मनुष्य को क्षमा करके भी पाप के साथ अपने व्यवहार में वह धर्मी ठहरता। यीशु ने अपना स्वयं का बलिदान देकर प्रायश्चित या छुटकारा उपलब्ध करवाया। एक अर्थ में परमेश्वर ने हमें मिलने वाला दण्ड अपने ऊपर ले लिया। इस प्रकार वह धर्मी रहकर भी पापियों को बचा सकता है।

मनुष्य के लिए धर्मी होना आवश्यक है, परन्तु वह अपने धर्मी होने के कारण किसी और को धार्मिकता नहीं दिला सकता। यह काम परमेश्वर ही कर सकता है, लेकिन परमेश्वर पापी को ''ऐसे ही दे'' नहीं सकता। न ही पापी परमेश्वर को बदला दे सकते, घूस दे सकते या बड़े-बड़े उपहार देकर प्रभावित कर सकते हैं। यीशु हमारे लिए अन्तिम और सिद्ध बलिदान बना। उसने अपने ऊपर पहले हमारे शरीर को और फिर हमारा पाप उठाया। वह हमारा बलिदान और हमारा प्रधान याजक *दोनों ही* है (इब्रानियों 2:14-18)। वह हमारा प्रभु और हमारा उद्धारकर्त्ता *दोनों* है (प्रेरितों 2:36)। वह हमारी जगह होने वाला बलिदान अर्थात हर यहूदी बलिदान का पूरा होना है। उसे दोषी नहीं बनाया गया था, बल्कि उसे हमारे पापों के लिए हमारी जगह पाप बनाया गया था (2 कुरिन्थियों 5:17-21)।

प्रायश्चित पाप की अत्यधिक दुष्टता को दर्शाता है। बिना क्रोध के पाप भावुकता है। ईश्वरीय अनुग्रह ने ईश्वरीय क्रोध को ईश्वरीय बलिदान से शान्त किया।

''पश्चाताप''

नया नियम कहता है कि पापियों के लिए अपने आप को बचाना असम्भव है। केवल

मसीहियत के पास ही बचाने वाला अर्थात उद्धारकर्त्ता यीशु है।

प्रायश्चित (जिससे मेल होता है) पश्चाताप (छुटकारा देने का काम) के साथ ही सम्भव करवाया गया है। प्रायश्चित और पश्चाताप आपस में इतने मिले हुए हैं कि इन्हें अलग करना कठिन है। पश्चाताप पाप से किया जाता है, परन्तु प्रायश्चित मनुष्य के लिए है। पश्चाताप डॉक्ट्रिनल सच्चाई है जबकि प्रायश्चित किसी डॉक्ट्रिनल सच्चाई को निजी तौर पर लागू करना है। पश्चाताप दोष को हटाना है जबकि प्रायश्चित पाप के कारण होने वाले ईश्वरीय क्रोध को उतारना है।

यीशु हमारा ''प्रायश्चित'' है (रोमियों 3:25, 26)। हमारी धार्मिकता विश्वास से होने वाली धार्मिकता है, जो मसीह के द्वारा होती है। यीशु का लहू प्रायश्चित का हमारा बलिदान है। क्रूस ही है, जहां मनुष्य के पाप का न्याय होता है। पश्चाताप के लिए जुर्माना चुकाना अर्थात कीमत चुकानी आवश्यक है (1 यूहन्ना 2:1, 2) जबकि प्रायश्चित के लिए परमेश्वर के न्याय को सही ठहराना आवश्यक है। हमें मोल देकर खरीदा गया और धर्मी परमेश्वर ने यीशु में हमारे विश्वास के द्वारा हमें धर्मी घोषित किया है। हमें क्षमा किए हुए घोषित किया गया है क्योंकि यीशु ने हमारे पाप का दाम चुका दिया है (इब्रानियों 2:17, 18; 1 यूहन्ना 4:9-11)।

यीशु हमारा ''फसह'' है (1 कुरिन्थियों 5:7)। उसने परमेश्वर से हमारे पाप अपनी पीठ पर रखवा कर उन्हें उठा लिया (देखें यशायाह 38:17)।

खीझकर परमेश्वर क्रूस से दूर जाकर खड़ा नहीं हुआ। उसने हमारी विनती में अपने आप को शामिल किया। मसीह में उसने हमारे पापों का दण्ड के विकल्प के रूप में नहीं बल्कि गहरे निजी प्रेम के कारण अपने ऊपर ले लिया। परमेश्वर क्रूस के मार्ग के बिना हमें क्षमा करके ग्रहण नहीं कर सकता और न करेगा।

''आरोप''

दूसरे की धार्मिकता से धर्मी ठहरने का विचार गहरा भी है और आसान भी। पापी मनुष्य कभी धर्मी नहीं हो सकता, जिस कारण वह किसी और की धार्मिकता से ही धर्मी ठहराया जा सकता है। धर्मी ठहराए जाने को ''सुसमाचार का सबसे बड़ा विरोधाभास'' कहा गया है। क्षमा देकर परमेश्वर पापियों को धर्मी ठहराता है (रोमियों 8:1, 2)।

आरोप जवाबदेही का एक शब्द है, जिसका इस्तेमाल किसी दूसरे के धन का हिसाब रखने में आने के अर्थ में किया जाता है। हमारे पापों का आरोप मसीह को दिया जाता है, जैसा पौलुस ने कहा है, ''धार्मिकता, जो परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है'' (फिलिप्पियों 3:9; यशायाह 53:5, 6, 10, 11; रोमियों 4:11; 14:9; 1 पतरस 2:24)। फिलिप्पियों 3:7-11 को बार-बार पढ़ें। हम अनुग्रह को कमाना चाहेंगे, परन्तु अनुग्रह को कमाया नहीं जा सकता! बर्टन कॉफ़मैन ने सही कहा है, ''धार्मिक जीवन के दस लाख वर्षों में भी व्यक्ति ऐसा कुछ नहीं कर सकता, जिससे मनुष्य को परमेश्वर की ओर से मिलने वाले उद्धार के एक भाग को भी कमाया जा सके।''[1] इसके अलावा आरोप वाली धार्मिकता मनुष्य के हम को खत्म कर देती है। उद्धार में खूबी का काम केवल क्रूस है।

''छुड़ौती''

सबसे प्रसिद्ध और प्रायश्चित का सबसे कम समझ आने वाला पहलू ''छुड़ौती'' है। छुड़ौती दासों को स्वतंत्र करवाने के लिए दिया जाने वाला दाम है और पापी लोग पाप के दास हैं। परमेश्वर ने क्रूस पर सदा-सदा के लिए शैतान को खामोश कर दिया (मत्ती 20:28; गलातियों 3:13; 1 तीमुथियुस 2:5, 6; तीतुस 2:14, 15), जहां हमें छुड़ाने के लिए मेमने का लहू दिया गया था। शैतान को लगा कि यह उसकी सबसे बड़ी पराजय है! यीशु पाप का दाम और हमारी मृत्यु के विकल्प के रूप में हमारे लिए मर गया। वह किसी कार्य के लिए शहीद नहीं हुआ बल्कि उसने अपनी इच्छा से हमारी छुड़ौती या छुटकारे के लिए अपना प्राण दे दिया। यीशु ने पाप को क्षमा किए जाने योग्य और मनुष्य को बचाने योग्य बना दिया। हैलेलुय्याह, हमारा छुड़ाने वाला जीवित है!

यह छुड़ौती किसे दी गई? परमेश्वर ने शैतान से पापियों को वापस नहीं खरीदा। परमेश्वर किसी से भी सौदेबाज़ी नहीं करता! हम ''पाप के हाथ बिके हुए'' हैं (रोमियों 7:14; NKJV), परन्तु हम शैतान के हाथ बिके हुए नहीं हैं। क्रूस पर शैतान नहीं बल्कि परमेश्वर संतुष्ट हुआ था (1 यूहन्ना 2:1, 2)। शैतान तो ''दोष लगाने वाला'' (प्रकाशितवाक्य 12:9, 10)। परमेश्वर पाप को दण्ड दिए बिना धर्मी नहीं हो सकता। पाप का जुर्माना चुकाया जाना आवश्यक था।

न ही यह छुड़ौती समाज को दी गई। समाज के पास पाप को दण्ड देने के लिए कोई अदालत या कानून नहीं है। छुड़ौती परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता को संतुष्ट करने के लिए दी गई थी। छुड़ौती दिए जाने पर कर्ज़दार पूरी तरह से अपना हो जाता है। छुड़ौती या छुटकारा पाप के अपमान के लिए संतुष्टि है। कानून का जुर्माना (रोमियों 6:23) चुका दिया जाता है और इसकी पवित्रता बहाल की जाती है। छुड़ौती या छुटकारा पाप की गम्भीरता को दिखाता है। उद्धार हमें सुसमाचार पर विश्वास करने और उसकी बात मानने से दान के रूप में दिया जाता है। यीशु ने शैतान को ही उसके सिंहासन से नहीं उतारा, उसने पाप का दण्ड भी दिया। उसके अनुग्रह के अजूबे के द्वारा दिए बिना पाप का कर्ज़ चुकाया नहीं जा सकता।

छुड़ाए हुओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि छुटकारा क्या है!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 122.